

फ्लोरा फौना और 'फंगा'

प्रलिस के लयः

[संयुक्त राष्ट्र जैववधऱता](#), वनस्पतऱ और जीव, [कवक](#), [सपीशीज सरवाइवल कमीशन \(SSC\)](#), [परकृतऱ संरक्षण के लयऱ अंतरराष्टरीय संघ \(IUCN\)](#)

मेन्स के लयः

कवक और संरक्षण में उनका महत्त्व

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [संयुक्त राष्ट्र जैववधऱता](#) ने [कवक](#) के महत्त्व को उजागर करने के लयऱ वशऱव स्तर पर लोगों से आग्रह कयऱ है कऱ जब भी वे 'फ्लोरा और फौना (वनस्पतऱ और जीव)' कहें तो शब्द 'फंगा (कवक)' का उपयोग करें।

संयुक्त राष्ट्र जैववधऱता द्वारा 'फंगा' शब्द के उपयोग का आग्रह:

- संयुक्त राष्ट्र जैववधऱता के अनुसार, "अब कानूनी संरक्षण ढाँचे में वनस्पतऱऱ और जीवों के साथ समान स्तर पर कवक की पहचान एवं उसे संरक्षतऱ करने का समय आ गया है।"
- यह पहली बार नहीं है जब फ्लोरा और फौना (वनस्पतऱ और जीव) के साथ कवक को भी शामिल करने का अनुरोध कयऱा गया है।
 - इससे पहले [IUCN](#) के [सपीशीज सरवाइवल कमीशन \(SSC\)](#) ने घोषणा की थी कऱ वह अपने आंतरकऱ और सार्वजानकऱ संचार में "माइकोलॉजकऱली समावेशी" भाषा का उपयोग करेगा तथा संरक्षण रणनीतऱऱों में दुर्लभ एवं लुप्तप्राय वनस्पतऱऱों और जीवों के साथ कवक को शामिल करेगा।
- कवक, [यीस्ट](#), फफूँद और [मशरूम](#) के बनिा पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं है कऱकऱ ये अपघटन और वन पुनरजनन, स्तनधारऱऱों के पाचन, [कारबन पृथक्करण](#), वैश्वकऱ पोषक चक्र और [एंटीबायोटकऱ दवा](#) के लयऱ महत्त्वपूरण हैं।

कवक:

- परचयः
 - कवक या फंगस [यूकेरयोटकऱ सूक्ष्मजीव](#) या स्थूल जीवों का एक वधऱ समूह है जो वनस्पतऱऱों, जीवों और [बैक्टीरयऱ](#) से अलग अपने स्वयं के जैवकऱ साम्राज्य से संबधऱतऱ होते हैं।

The Six Kingdoms of Life



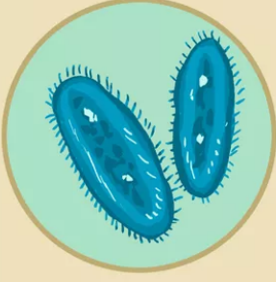
Animalia



Plantae



Fungi



Protista



Eubacteria



Archaeobacteria

//

■ विशेषताएँ:

- यूकैरियोट्स: वनस्पतियों, जीवों और प्रोटोसिस्ट की तरह कवक में जटिल झिल्लीबद्ध कोशिकांग तथा एक वास्तविक केंद्रक होता है।
- हेटरोट्रोफिक: कवक मुख्य रूप से डीकंपोजर या सैपरोफाइट्स होते हैं, जिसका अर्थ है कि वे अपने परिवेश से जैविक पदार्थों को अवशोषित करके पोषक तत्व प्राप्त करते हैं।
- एंजाइमों का स्राव: कवक जटिल जैविक यौगिकों को सरल पदार्थों में तोड़ने के लिये एंजाइमों का स्राव करते हैं, जिनमें वे अवशोषित कर सकते हैं।

■ लाभ:

- पोषक तत्वों का आवर्तन:
 - कवक पोषक तत्वों को पौधों के लिये सुलभ बनाने हेतु परिवर्तित किया जा सकता है, यह कार्बनिक पदार्थों को तोड़कर डीकंपोजर के रूप में कार्य करता है, जिससे पोषक तत्वों की साइकिलिंग और मट्टी की उर्वरता बढ़ती है।
- कार्बन साइकिलिंग और जलवायु वनियमन:
 - कवक कार्बन चक्र में भाग लेकर मट्टी के कार्बन भंडारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कार्बनिक पदार्थों को वघटित करते हैं, मृत पौधों से कार्बन का चक्रण करते हैं और पौधों की जड़ों के साथ सहजीवी संबंध बनाते हैं।
 - माइकोरजिनल कवक पौधों की जड़ों के साथ सहजीवी संबंध बनाते हैं, जिससे उन्हें पोषक तत्व ग्रहण करने में सहायता मिलती है।
- भोजन के रूप में कवक:
 - इसके अनेक लाभकारी अनुप्रयोग हैं। उदाहरण के लिये यीस्ट का उपयोग बेकगि और शराब बनाने में किया जाता है। कवक पेनसिलिनि जैसे एंटीबायोटिक्स भी उत्पन्न करते हैं।
 - कुछ कवक, जैसे- मशरूम और ट्रफल्स, खाने योग्य हैं तथा व्यंजनों में बेशकीमती हैं। अन्य जैसे- फफूँद (Molds) का उपयोग पनीर बनाने में किया जाता है।
- पर्यावरण संरक्षण:
 - कवक को पर्यावरण से विभिन्न प्रदूषकों, जैसे- प्लास्टिक और अन्य पेट्रोलियम-आधारित उत्पादों, फार्मास्यूटिकल्स तथा व्यक्तित्व देखभाल उत्पादों एवं तेल को कम करने में सहायक पाया गया है।
- कवक के हानिकारक प्रभाव:
 - मानव और पशु रोग:
 - कवक मनुष्यों और जानवरों में विभिन्न प्रकार की बीमारियों का कारण बन सकता है। जिसमें मेंथलीट फुट (डर्माटोफाइट्स के कारण), दाद, हिसिटोप्लास्मोसिस तथा एस्पेरगिलोसिस शामिल हैं।
 - कुछ कवक मायकोटोक्सिन नामक विषैले यौगिकों का उत्पादन करते हैं, जो भोजन को दूषित कर सकते हैं और उपभोग करने पर स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं।
 - फसल और पौधों के रोग:

- कवक रोगजनक फसलों और पौधों को संक्रमित एवं नुकसान पहुँचा सकते हैं, जिससे कृषि में अत्यधिक आर्थिक नुकसान हो सकता है।
- उदाहरणों में रतुआ (Rust), पाउडर फफूँद (Powdery Mildew) और वभिन्न प्रकार के फंगल ब्लाइट (Fungal Blights) शामिल हैं।
- एलर्जी प्रतिक्रिया:
 - वशेष रूप से उच्च आर्द्रता वाले इनडोर वातावरण में फंगल बीजाणुओं के संपर्क में आने से कुछ व्यक्तियों में एलर्जी और श्वसन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं।
 - एलर्जिक राइनाइटिस और एलर्जिक ब्रोंकोपुलमोनरी एस्पिरगिलोसिस जैसी स्थितियाँ फंगल एलर्जी से जुड़ी हैं।
- वस्तुओं का जैव नमिनीकरण:
 - कवक, कपड़ा, चमड़ा तथा कागज़ जैसी वस्तुओं को नष्ट कर सकता है, यद्यपि वस्तुओं को ठीक से संरक्षित या संग्रहीत नहीं किया जाता है तो यह नुकसानदेह हो सकता है।

आगे की राह

- कवक संरक्षण को बढ़ावा देना: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कानूनी संरक्षण ढाँचे में कवक को शामिल करने की पहल करनी चाहिये। इसमें कवक-समृद्ध पारस्थितिक तंत्र एवं आवासों की पहचान तथा रक्षा करना शामिल होगा।
 - अनुसंधान, आवास संरक्षण तथा बहाली पर्यासों के लिये वशेष रूप से फंगल संरक्षण परियोजनाओं के लिये पर्याप्त धन एवं अनुदान आवंटित किया जाना चाहिये।
- अनुसंधान एवं शक्तिषा:
 - कवक विविधता, वितरण तथा पारस्थितिक भूमिकाओं का अध्ययन करने के लिये अनुसंधान हेतु नविश किया जाना चाहिये। प्रभावी संरक्षण पर्यासों के लिये इनके बारे में जानकारी होना आवश्यक है।
 - पारस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य, पोषक चक्र तथा जैवविविधता में कवक के महत्त्वपूर्ण योगदान के बारे में जनता, नीति निर्माताओं और संरक्षणवादियों को सूचित करने के लिये जागरूकता अभियान एवं शैक्षिक कार्यक्रम प्रारंभ करना चाहिये।
- माइक्रोलॉजिकल समावेशिता: सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों तथा संरक्षण संस्थाओं को अपने संचार, नीतियों एवं रिपोर्टों में "माइक्रोलॉजिकली समावेशी" भाषा अपनाने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

